Que:→ राजपूतों की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धान्तों की चर्चा

सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक का इतिहास अनेक राजवंशों के उत्थान एवं पतन का काल रहा है जिनमें गुर्जर-प्रतिहार, चौहान, परमार, चालुक्य, चन्देल, गहड़वाल, गुहिल, तोमर इत्यादि अधिकांश वंश राजपूत माने जाते हैं और इसी कारण इस काल को राजपूत काल कहा जाता है। हर्ष के बाद भारत की एकता पुनः शिथिल पड़ गई थी और विकेन्द्रीकरण की भावना बलवती होने के कारण देश में पुनः छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ, जिन्हें एकता के सूत्र में बाँधनेवाली सत्ता का उस समय अभाव था। यह सही है कि राजपूतों ने सामंतवादी व्यवस्था पर आधारित एक विशाल साम्राज्य की स्थापना या इस एकता को कायबद्ध करने का प्रयास किया तथा तत्कालीन विदेशी आक्रमणकारियों का बड़ी वीरता से मुकाबला किया।

राजपूतों की उत्पत्ति का प्रश्न आज तक भारतीय इतिहास का विवादास्पद पहलू है। राजपूतों की उत्पत्ति से संबद्ध अनेक सिद्धान्त एवं मत समय-समय पर प्रतिपादित किए गये हैं। कुछ विद्वानों ने इन्हें विदेशी प्रमाणित करने का प्रयास किया है; तो कुछ इसकी उत्पत्ति अग्निकुंड से मानते हैं। राजपूतों को ब्राह्मण या जनजातियों से उत्पन्न भी बताया गया है। कुछ विद्वानों ने राजपूतों की उत्पत्ति को नए भूमि के उपनिवेशीकरण की बहुलता तथा नई आर्थिक विकसित अर्थव्यवस्था से सम्बद्ध माना जाता है। स्वयं राजपूत अपने आपको सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी प्रमाणित करते हैं। अनेक साहित्यिक स्रोतों जैसे महाकाव्य, नवसाहसांकचरित, कुमारपालचरित - कीर्तिलता, पृथ्वीराजरासो इत्यादि तथा अनेक अभिलेखीय साक्ष्यों से राजपूत के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

राजपूतों के उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धान्तों को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

1. राजपूतों की विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त
2. अग्निकुंड का सिद्धान्त
3. देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त

1. राजपूतों की विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत अनेक यूरोपीय तथा कुछ भारतीय विद्वानों की मान्यता है कि राजपूत भारत के मूल निवासी नहीं थे बल्कि विदेशी थे। कर्नल टॉड के अनुसार ये शक-

कुषाण तथा हूणों की संतान थे विलियम क्रुक तथा वी० ए० स्मिथ का भी मानना है कि राजपूत विदेशी थे गुर्जर भी राजपूत होने का दावा करते हैं, वस्तुतः हूणों के साथ ही भारत आए। इन विदेशियों को द्वितीय श्रेणी के क्षत्रिय के रूप में हिन्दु समाज में समाहित कर लिया गया तथा कालांतर में वे राजपूत शासकों के रूप में प्रतिष्ठित हुए। डॉ० ईश्वरीप्रसाद तथा डी० आर० भण्डारकर भी राजपूतों को विदेशी मानते हैं। इस मत को स्वीकार करने में अनेक कठिनाइयाँ हैं अगर यह स्वीकार कर लिया जाए कि गुर्जर हूणों के साथ ही भारत आए, तो साहित्यिक स्रोतों में हूणों के साथ ही गुर्जर का भी उल्लेख होना चाहिए था परन्तु ऐसा नहीं है। महाभारत में हूणों का उल्लेख है पर गुर्जर का नहीं। हर्षचरित में भी दोनों का जिक्र अलग-अलग हुआ है एक साथ नहीं। अतः नस्ल एवं रीति रिवाजों के आधार पर राजपूतों के विदेशी प्रमाणित करना अनुचित प्रतीत होता है।

(II) अग्निकुंड का सिद्धांत —

राजपूतों की उत्पत्ति से संबद्ध दूसरी सर्वाधिक चर्चित मान्यता यह है कि राजपूतों का जन्म यज्ञकुण्ड से हुआ था चंदबरदाई ने पृथ्वीराजरासो में राजपूतों की उत्पत्ति से संबद्ध एक कथा का उल्लेख किया है इसके अनुसार परशुराम द्वारा क्षत्रियों के संहार के पश्चात चारो तरफ अव्यवस्था व्याप्त हो गई। तब धर्म की सुरक्षा के लिए ब्रह्मा की आज्ञा से आबू पर्वत पर विश्वामित्र, गौतम, अगस्त्य आदि ऋषि-मुनियों ने यज्ञ आरंभ किया दैत्यों से यज्ञ की सुरक्षा के लिए वशिष्ठ मुनि ने अग्निकुंड से प्रथमतः तीन वीर योद्धाओं — प्रतिहार, चालुक्य एवं परमार को उत्पन्न किया लेकिन वे दैत्यों पर विजय प्राप्त नहीं कर सके। तब एक नए यज्ञकुण्ड का निर्माण करवाकर वशिष्ठ ने उससे चाहमान (चौहान) को उत्पन्न किया, जिसने दैत्यों को पातालपोक तक खदेड़ दिया। यह कथा नवसाहसांकचरित, हम्मीररासो तथा सिसाणा अभिलेख से भी मिलती है। परंतु इसकी

ऐतिहासिकता पूर्णतया संदिग्ध है यह कवि की कपोल कल्पना ही मानी जाती है। इससे कुछ विद्वानों ने यह निष्कर्ष भी निकाला है कि विदेशी जातियों को अग्नि द्वारा शुद्ध कर राजपूत का दर्जा दिया गया।

(iii) देशी स्रोत का सिद्धांत —

अनेक विद्वानों ने राजपूतों की उत्पत्ति देशी मानी है तथा इनका सम्बन्ध प्राचीन क्षत्रिय वंशों, ब्राह्मण या आदिम जनजातियों से जोड़ने का प्रयास किया है। अनेक इतिहासकारों ने राजपूतों को वैदिक क्षत्रियों का परिवर्तित रूप ही माना है। अनेक राजपूत राजाओं के अभिलेखों में अनेक सूर्यवंशी या चंद्रवंशी क्षत्रियों से सम्बद्ध दिखाये गये हैं। प्रतिहार, राष्ट्रकूट, सिसोदिया तथा चालुक्य अपना सम्बन्ध राम या कृष्ण से स्थापित करते हैं। जी. एच. ओझा, सी० वी० वैद्य तथा अन्य कई इतिहासकार यही मानते हैं कि राजपूत प्राचीन क्षत्रियों की ही संतान है। इसके विपरीत डा० दशरथ शर्मा, विश्वम्भरशरण पाठक जैसे अनेक विद्वानों ने राजपूत जाति की उत्पत्ति ब्राह्मणों से मानी है। प्रतिहारों, चौहानों, चंदेलों, गुहिलों आदि वंशों के संस्थापक ब्राह्मण ही थे। गुप्त साम्राज्य और वर्द्धन साम्राज्य के पतन के पश्चात् तथा अरबों के आक्रमण से फैली अव्यवस्था से सुरक्षा प्रदान करने के लिए ब्राह्मणों ने शास्त्र के स्थान पर शस्त्र का सहारा लिया। प्राचीन क्षत्रिय वंशों से अपना संबंध जोड़ा तथा कालांतर में राजपूत कहलाने लगे। स्मिथ महोदय ने यह तर्क भी प्रस्तुत किया है कि राजपूत प्राचीन आदिम जातियों गोंड भर, खरवार आदि के वंशज थे। चंदेल, राठौर, गढ़वाल आदि वंशों की उत्पत्ति इन्हीं से हुई थी। आर्यों के सम्पर्क में आने से इनमें राजनीतिक चेतना विकसित हुई, क्षेत्र विशेष में राजनीतिक चेतना विकसित हुई, क्षेत्र विशेष में राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर वे क्षत्रिय कहलाए तथा कालांतर में राजपूत कहलाने लगे।

इन सभी सिद्धान्तों के अतिरिक्त प्रो० बी०डी० चट्टोपाध्याय ने राजपूतों के ~~[illegible]~~ उत्पत्ति का संबंध अनेक नवीन जातियों की संरचना, क्षत्रिय स्तर की प्राप्ति के लिए इच्छुक वंशों का उदय, सामाजिक संबंधों में स्थानीयता पर बल आदि कारणों से जोड़ा है। नए क्षेत्रों के उपनिवेशीकरण की बहुलता तथा कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था

Scanned with CamScanner

के विस्तार जिसमें भूमि अनुदानो की विशेष भूमिका रही के चलते अनेक नए राजवंशो का उदय हुआ। जो क्षत्रियो और ब्राह्मणों के आदर्शों को अपनाकर राजपूत बने। 270

इस प्रकार हम कह सकते है कि राजपूतों की उत्पत्ति का प्रश्न एक व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ प्रस्तुत करता है राजपूतों की उत्पत्ति का प्रश्न मात्र विदेशी या स्वदेशी खोजों में निबद्ध नहीं है बल्कि व्यापक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में है। राजपूत वंशो की उत्पत्ति विदेशी ब्राह्मणों जनजातियों या वैदिक क्षत्रियों से होना स्वाभाविक है। इस सामाजिक प्रक्रिया को धर्म के अनुरूप अत्युपकर्ष तथा अपत्यापकर्ष का सैद्धान्तिक आधार प्राप्त था। इस प्रक्रिया में व्यापक आर्थिक तथा समाजिक परिवर्तनो से उद्भूत मध्यकालीन चेतना की ऐतिहासिक अनिवार्यता ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। राजपूतों का उदय मुख्य रूप से ~~[illegible]~~ राजनीतिक प्रक्रिया थी जिसमें राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के इच्छुक अनेक आत्मबद्ध वर्ग इन आदर्शों का पालन करते थे जो तात्कालीन राजनीतिक सिद्धान्तों पर स्थापित हुए थे। चूँकि राजपूत वंशों में प्रवेश, मुख्य रूप से राजनीतिक शक्ति के माध्यम से होता था अतः पारंपरिक आदर्श अथवा वैधता की आवश्यकता बनी रही। इस दृष्टि से राजपूतों की उत्पत्ति एक अनवरत जातीय धरनाक्रम अर्थात् वंशो के संरचना के समान रही थी, जिनमें से अनेक ने पारंपरिक काल के क्षत्रिय वंशो से अत्यन्त उत्साहपूर्वक अपने संबंधों का दावा करके वैधता प्राप्त करनी चाही, किन्तु द्वितीय चरण में राजपूतों का उदय एक व्यापक समाजिक घटनाक्रम बन गयी।